International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: (RJIF 5.72)
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 3; March 2016; Page No. 414-418

रामदरश मिश्र की कहानियों का कथानक

डॉ. अमिता
प्राध्यापक, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रस्तावना

रामदरश मिश्र मूलतः कवि हैं लेकिन कविता लिखने के साथ–साथ ही उन्होंने कहानी लिखना भी प्रारम्भ किया। इस प्रकार मिश्र जी कविता के साथ–साथ कहानी में प्रवेश करते हैं। 'मेरी कहानी रचना' में रामदरश मिश्र स्वयं यह स्वीकार करते हैं– ''कहानी के बीज मेरी कविता में ही निहित थे जो अनुकूल अवसर पर धीरे–धीरे अंकुरित हो उठे। मैं जिस गाँव देहात में पैदा हुआ, पला–पुसा, प्रारंभिक शिक्षा पायी, अभाव, दुःख और संघर्ष के सघन अनुभवों में गुजरा वह गाँव देहात मुझे तरह–तरह से अपनी अभिव्यक्ति के लिए पीड़ित करता था। उसने यथार्थ की इतनी विपुल सम्पदा सौंपी थी कि उसकी अभिव्यक्ति एक विधा में अँट नहीं पा रही थी। इसलिए मैं कविता लिखते–लिखते कहानी भी लिखने लगा।'' [1]

गाँव और शहर दोनों परिवेश के अनुभवों को लेकर मिश्र जी ने कहानियाँ लिखी हैं। वस्तुत 'अनुभव' कहानीकार रामदरश मिश्र की कहानियों की ताकत बनकर उभरा है। रामदरश के शब्दों में – ''मैंने अपनी कहानियों में जिस एक चीज को बहुत महत्त्व देने की कोशिश की वह है – अनुभव और यह अनुभव मैं अपने परिवेश से खींचने की चेष्टा करता रहा। इसलिए मेरी कहानियाँ मुख्यतः सामाजिक अनुभवों की कहानियाँ हैं। [2]

रामदरश मिश्र ने इन कहानियों में ग्राम और शहर दोनों परिवेशों से कथानक चुने हैं। ग्राम और शहर के जीवन के विविध रंग इन कथानकों में दिखाई देते हैं। ग्राम और शहर परिवेश के बदलते हुए विभिन्न जीवन यथार्थ और उम्र के बढ़ने के साथ की समझदारी के कारण उनकी कहानियों में अन्तर आता गया है किन्तु अनुभव का साथ कहीं भी कहानीकार रामदरश मिश्र ने नहीं छोड़ा। महावीर सिंह चौहान के अनुसार – ''जीवन की किसी मामूली सी घटना, प्रसंग, विचार या संवेदना में डॉ. रामदरश मिश्र अपनी कहानी के लिए अपेक्षित सामग्री जुटाकर एक ऐसी दुनिया की रचना कर डालते हैं जो हमारे अनुभव और बोध के समीप होती है। हम जैसे दुबारा और अपेक्षाकृत अधिक सावधानी के साथ अपने खुद के अनुभव जगत में प्रवेश करते हैं–अपनी दुनिया को और इस दुनिया के बीच खुद अपने आपको एक नए ढंग से प्राप्त करने के लिए।'' [3]

रामदरश मिश्र हमारे आस–पास के जीवन की किसी घटना अथवा प्रसंग को लेकर कहानी की रचना करते हैं जो जीवन की किसी सामाजिक समस्या अथवा सच्चाई पर प्रकाश डालती है और उसके दर्द से हम सब भी जुड़ा पाते हैं। रामदरश जी 'रामदरश मिश्र रचनावली' में 'मेरी कहानी रचना' में लिखते हैं – ''वास्तव में, मैं अपनी कहानियाँ अपने आस–पास किसी घटित दृश्य, प्रसंग से या समाज में स्थित यथार्थ के किसी टुकड़े से या अपने अनुभव से लगातार उतरते परिवेश के किसी यथार्थ चरित्र से या लगातार टकराती किसी संवेदना से उठाता हूँ। मैं किसी नयी या पुरानी समस्या को मूर्तिमान करने के लिए कथानक का विन्यास नहीं करता बल्कि आस–पास अधबनी कथा को ही अपने ढंग से बनाकर समस्या तक ले जाता हूँ। [4]

मिश्र जी की कहानियों के कथानक की कथा अधिकांशतः सीधी नहीं चलती है बल्कि कथा मोड़ लेती हुई परिवेश के जीवन्त यथार्थ को उधाढ़ती हुई चलती है यही कारण है कि कहानियों के कथानकों में गरीबी, अभाव, लाचारी, पीड़ायें और संवेदनायें घटनाओं जैसी लगती हैं। कथानक एक दम सीधे और सपाट मार्ग पर नहीं चलता है बल्कि अपने आस–पास की परिस्थितियों से टकराता हुआ आगे बढ़ता है। कथानक का सृजन कहानीकार स्वयं नहीं करता बल्कि परिवेश की परिस्थितियाँ, घटनायें इत्यादि से कथानक स्वयं निर्मित होता हुआ आगे बढ़ता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण मिश्र जी का कथानक एकदम निजी है। कथानक परिवेश से जुड़कर पात्रों से भिड़ जाता है। इस प्रकार परिवेश, घटनायें और पात्रों को समेटते हुए कथानक आगे बढ़ता है। पात्रों के आस पास उनका जीवन्त परिवेश होता है। जिसमें घर–परिवार, समस्यायें, खेत खलिहान, नौकरी, यात्रा घटनायें, रीति–रिवाज, अभाव आदि सब कुछ शामिल होता है। इस परिवेश में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्यायें भी कथानक में जुड़ जाती हैं।

रामदरश जी ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विसंगतियों पर कथानकों का निर्माण किया है। मिश्र जी के अनुसार – ''हमारे समकालीन परिवेश में राजनीति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था आदि के दबाव में न जानें कितनी सामाजिक विसंगतियाँ, विडम्बनाएँ और मूल्य संकट पैदा हो गए हैं। स्वभावतः यथार्थ के ये आयाम हमारी सर्जनात्मकता को चुनौती देते हैं'' [5] राजनीतिक व्यवस्था से जुड़े कथानक वहाँ हैं जहाँ कहानी राजनीतिक भ्रष्टाचार और व्यवस्था के अनेक संगत–विसंगत रूप को लेकर चलती है। 'एक वह', 'खण्डहर की आवज', 'एक इन्टरव्यू उर्फ कहानी तीन शतुरमुर्गों की', 'माँ', 'सन्नाटा और बजता हुआ रेडियों', 'कहाँ जाओगे?', 'गपशप' आदि कहानियों के कथानक राजनीतिक व्यवस्था से जुड़े हुए हैं।

अर्थ की समस्या से जुड़ी बहुत सी कहानियां हैं जिनका कथानक अर्थव्यवस्था की विसंगतियों का चित्रण करता है। ऐसी कहानियों में 'कर्ज', 'जमीन', 'ऊँची इमारत', 'दिनचर्या', 'सर्पदंश' 'हद से हद तक' आदि हैं। इनमें आर्थिक समस्याएं उभरकर सामने आयी हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक विषय प्रायः सभी कथानकों में है। समाज और संस्कृति की विसंगतियों और विषमताओं पर उन्होंने अनेक कहानियाँ लिखी हैं। गाँव और शहर के जीवन में बदलते हुए यथार्थ और द्वन्द्व उनकी कहानियों के कथानकों के प्रमुख विषय रहे हैं। 'मुर्दा मैदान' दिल्ली के एक ऐसे क्षेत्र की कहानी है जहाँ एक बहुत बड़ा मैदान खाली पड़ा है। इस वीरान मैदान में मृत जानवरों के शरीर फेंकने के साथ ही आसपास का सारा कूड़ा भी यही फेंका जाता है। इस तरह कूड़ा और माँस हड्डियों की दुर्गन्ध यहाँ फैली रहती है। इस मैदान के आस–पास से गुजरना मुश्किल है परन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनका जीवन इस कूड़े के ढेर के बल पर ही चल रहा है। ये वे लोग हैं जो कूड़े में पुरानी चीजें, कागज, लोहे के टुकड़े आदि चुन–चुन कर ले जाते हैं और उसी के बल पर दो रोटी जुटाने की कोशिश करते हैं।

कहानी का यह कथानक अपने बीच से आज की विसंगतियों को (चाहे वे राजनीतिक हों या आर्थिक हों या सामाजिक हों) उभारता है और उस कड़वे यथार्थ को हमारे सामने ला खड़ा करता है जिससे नजरें मिलाते हुए भी हम सकुचाते हैं अथवा एक शर्मिंदगी महसूस करते हैं। बारह साल का भोलू जब कूड़े और मुर्दों की

दुनिया में अपने लिए दो रोटी जुटाने की चेष्टा में लगा नजर आता है तब व्यवस्था के प्रति घृणा ही नहीं आक्रोश भी उपजता है।

कथानक अनेक घुमावदार घटनाओं को अपने में समेटता हुआ अंत में नाटकीय मोड़ ले लेता है जो बड़ा मार्मिक है। भोला मंत्री के दर्शन के लिए खड़ा होता है सड़क पार करना चाहता है किन्तु पुलिस की आँख बचाकर सड़क पार करने की कोशिश में मंत्री की गाड़ी के नीचे आ जाता है। मंत्री उसे बचाने की जगह पुलिस पर बिगड़ते हैं।

'सड़क' कहानी का कथानक ग्राम जीवन से सम्बन्धित है। कहानी के केन्द्र में गाँव के रिटायर्ड मास्टर चन्द्रभान पांडे की व्यथा कथा है लेकिन वास्तव में इसके माध्यम से स्वातंत्रयोत्तर भारत की व्यथा कथा कहानीकार ने कही है। कहानी की शुरूआत अत्यन्त नाटकीय ढंग से होती है। पहले ही दृश्य में हम अपने कथानायक को इलाके के कांग्रेसी विधायक जंगबहादुर द्वारा अपमानित होता हुआ पाते हैं। यह विधायक जंगबहादुर कभी पांडे जी का शिष्य रह चुका होता है। हर रोज पिटने वाला यह सबसे बोदा लड़का ही बाद में नेता बन जाता है। कभी गाँधी की तस्वीर पर पेशाब करने वाला यह लड़का राष्ट्रीय जीवन का कर्णधार बन गया और मास्टर चन्द्रभान पांडे जैसे सच्चे, ईमानदार गाँधीवादी उपेक्षित और अपमानित होने लगते हैं। कहानी का कथानक सब कुछ अपने भीतर से स्पष्ट करता हुआ आगे बढ़ता है और अंत बड़ा मार्मिक और स्वाभाविक रूप में प्रकट होता है। सुबह पांडे जी देखते हैं कि रमेश के बच्चे फटे–पुराने नेकर पहनकर स्कूल चले गए। वे सोचते हैं कि इतनी मंहगी खादी पहनकर वह बच्चों को कहीं नंगा ही रख रहा है शायद आजतक उसने ऐसा ही किया। अब उसे नया ज्ञान मिल जाता है जिसमें पुरानें संस्कार और आदर्श टूट जाते हैं। कहानी छोटी होते हुए भी सांकेतिक और प्रतीकात्मक है। कहानी की प्रतीकात्मकता कहानी समाप्त होने पर ही समझ आती है।

रामदरश मिश्र की कहानियों के कथानकों में प्रमुख विषय सामाजिक ही है। मिश्र जी की कहानियाँ समाज के असुन्दर रूप को लेकर एक व्यथा, दर्द दे जाती हैं। वे समाज के असुन्दर रूप को खत्म करना चाहते हैं। समाज अच्छा बने, उसमें सभी लोग सुख शान्ति पूर्वक जी सकें यह तड़प मिश्र जी की कहानियों के कथानकों में दिखाई देती है। 'समाज' में सबसे उपेक्षित और अभिशप्त आदमी की समस्याओं का विषय अनेक रूप लेकर कहानियों में अभिव्यक्त हुआ है। यह अभिशप्त मनुष्य हरिजन, गरीब, मजदूर और नारी सभी रूपों में कथानकों में आया है इसलिए कथानक स्वाभाविक, सहज और मर्मस्पर्शी बन पड़े हैं। इन कहानियों के कथानकों में आम आदमी के दुख–दर्द, आशा–निराशा, सफलता–असफलता को विषय बनाया है। उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग अथवा आम आदमी के शोषण, अत्याचार, अन्याय, प्रताड़ना से उन्होंने अपनी कहानियों के कथानकों का निर्माण किया है। 'एक औरत एक जिन्दगी' कहानी में भवानी अन्याय और शोषण के खिलाफ हाथ में गंडासा लेकर खड़ी हो जाती है – '''जिस किसी ने भी डांठ पर हाथ लगाया उसे काट दूंगी यह डांठ हमारे खून–पसीने से सिंचा है।'' [6]

'पशुओं के बीच' कहानी में अलेना सरपंच सिमंगला के शोषण का शिकार होती है किन्तु उसके बेटे महेश में इस अन्याय के विरुद्ध आग भरी हुई है – ''अलेना ने घूमकर महेश की ओर देखा। उसकी आंखों में एक भयंकर आग थी माँ मैं इसका बदला लूंगा।'' [7]

कुछ कहानियों के कथानक नाटकीय ढंग से शुरू होते हैं 'कर्ज' कहानी का प्रारम्भ द्रष्टव्य है –

''क्यों, बीमार हो क्या भीखू?''

''नहीं साहब''। उसने उत्तर दिया।

''फिर अस्पताल में लाइन में क्यों लगे हो?''

''यह तो खून देने वालों की लाइन है साहब।''

''तो तुम खून देने आये हो?''

''हाँ साहब, मैं तो हर महीने आता हूँ, कभी–कभी महीने में दो बार आता हूँ।''

''अरे तो इस तरह कैसे चलेगा भीखू? तुम्हारी तन्दुरुस्ती तो ऐसे ही चुस गयी है,''

''अब हर महीने खून देकर मरना है क्या?''

''जिन्दा कहाँ हूँ साहब, जितना भी जिन्दा हूँ ठाकुर धरमचन्द के लिए।'' [8]

यहाँ प्रारम्भ में अद्‌भुत नाटकीयता है। भीखू, धरमचन्द का कर्ज उतारने के लिए अपना खून बेचता है। उसकी इस दशा को देखकर कथावाचक को पीड़ा होती है। कथावाचक अतीत में पहुँचकर भीखू और धरमचन्द के बारे में बताता है और वर्तमान में कथावाचक भीखू से संवाद करता है इसके साथ ही कथानक में भीखू कभी–कभी अपने गाँव में रहने वाले माँ–बाप और अपनी प्राणप्रिया पत्नी को भी याद करता है। कथानक अनेक मोड़ लिए हुए है। धरमचन्द का कर्ज चुकाने के लिए वह जी तोड़ मेहनत करता है किन्तु बेईमान ठाकुर का कर्ज चढ़ता ही जाता है। कथानक समाज के भ्रष्ट, बेईमान लोगों की तस्वीर प्रकट करता है तथा इसके साथ ही मजदूरी करने वाले लोगों के दुखद जीवन को रेखांकित करता है। इस प्रकार भीखू के माध्यम से अनेक गाँव से निकले हुए शहर में काम करने वाले मिल मजदूरों की कारुणिक दशा का चित्र खोलते हुए यह कथानक आगे बढ़ता है। कथानक सीधे आगे नहीं चलता। कहानी का कथानक परिवेश में कसमसाते और जूझते हुए पात्रों की स्थितियों को उघाढ़ता हुआ घुमावदार तरीके से आगे बढ़ता है।

मिश्र जी भावुक कहानीकार हैं उन्होंने अभिशप्त नारी के जीवन पर अनेक कथानक निर्मित किए हैं। 'सीमा' कहानी में सीमा, 'आखिरी चिट्ठी में 'प्रभा, 'एक अधूरी कहानी' में सोहागी, 'अतीत का विष' की सुषमा, 'अकेला मकान' की जगरानी फुआ, 'एक औरतः एक जिन्दगी' की भवानी आदि की समस्याओं पर उन्होंने कथानक गढ़े हैं।

समाज में उत्पीड़ित नारी का दर्द उनसे देखा नहीं जाता। शोषित और दमित नारी को उसके सम्पूर्ण दुख दर्द के साथ उनके कथानक बड़े मर्मस्पर्शी बन पड़े हैं।

रामदरश किसी घटना, दृश्य, प्रसंग अथवा चरित्र के माध्यम से उसमें सर्जनात्मकता की संभावनाएँ तलाशते हैं और यदि उन्हें लगता है कि उससे किसी सामाजिक सत्य की निर्मिति हो सकती है तो उसे कहानी में ढाल लेते हैं जैसे 'मनोज जी' कहानी में एक देहाती कवि का चरित्र है किन्तु वह चरित्र अपने जीवन से संघर्ष का वह प्रकाश डालता है जो समाज के लिए और हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हो उठता है। 'एक औरतः एक जिन्दगी में' एक देहाती नारी का चरित्र है जो अपने अदम्य जीवन संघर्ष और साहस से ऐसा प्रकाश फेंकता है कि पाठक प्रभावित हुए बिना रह नहीं सकता।

मिश्र जी ने 'प्रेम' को भी कहानियों का विषय बनाया है। मिश्र जी के अनुसार – 'प्रेम' केवल एक संवदेना नहीं है, वह जीवन के प्रश्नों से जुड़कर प्रश्न भी बन जाता है, वह स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों के साथ–साथ व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों से भी टकराता है।'' [9]

प्रेम सम्बन्धों पर आधारित मिश्र जी की कहानियाँ हैं 'संध्या', 'लाल हथेलियाँ', 'प्रतीक्षा', 'एक भटकी हुई मुलाकात', 'अतीत का विष', 'बसंत का एक दिन'। रामदरश मिश्र के अनुसार – ''कुछ कहानियों में मैंने अनुभव में उतरी जीती–जागती स्थितियाँ उठा ली हैं और उनका पुनर्सृजन किया है जैसे 'घर लौटने के बाद' मा, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो', 'पिंजड़ा', 'मंगल यात्रा', 'माँः एक बिखरा हुआ दिन', 'जमीन', 'लड़की', 'बादलों भरा एक दिन' आदि। वास्तव में मैं इन रिस्थतियों में कहीं तो शरीक हूँ , कहीं इनका

समीपी द्रष्टा हूँ। ये जीती–जागती स्थितियाँ स्वयं कहानी बन जाती हैं। बस इन्हें सलीके से सजा देने और उनके कुछ विशेष बिन्दुओं पर बल देकर उन्हें प्रतीकार्थ से स्पंदित करने की आवश्यकता होती है।'' [10] रामदरश मिश्र कुछ कहानियाँ सुनी हुई घटनाओं के आधार पर लिखते हैं। अखबारों में नित्य प्रति घटनाएं छपती रहती हैं उन घटनाओं पर मिश्र जी विचार करके यह देखते हैं कि ये घटनाएँ, घटनाएँ मात्र हैं अथवा ये घटनाएँ हमारी किसी सामाजिक विसंगति अथवा समस्या पर प्रकाश डालती हैं अथवा किसी अन्य विषमता का प्रतिनिधित्व करती हैं। मिश्र जी के अनुसार – ''सुनी–सुनायी घटनाओं को कहानी बनाने के पीछे मेरी एक और शर्त होती है वह यह कि मेरे अनुभव क्षेत्र में आती हों ताकि उनका विस्तार करते समय या उनमें रंग भरते समय मैं उनसे सम्बद्ध स्थितियों और पात्रों के प्रामाणिक चित्र उभार सकूँ।'' [11] इस दृष्टि से मिश्र जी ने 'अतीत का विष' 'आखिरी चिट्ठी' 'टूटे हुए रास्ते', 'इज्जत' आदि कहानियाँ बनायी हैं। इन कहानियों के घटनात्मक सूत्र मिश्र जी ने अपने मित्रों से सुने थे।

रामदरश मिश्र ने किसी समस्या पर विचार करते–करते यह समझ लिया कि इस पर कहानी बनायी जा सकती है तो उस पर कथानक की रचना की। मिश्र जी के अनुसार–''कभी–कभी किसी समस्या से भी कहानी बनायी है यानी मेरे सामने शुरू में कोई अनुभूत स्थिति या पात्र नहीं रहा है बल्कि कोई समस्या रही है। इन कहानियों में मैंने समस्या के अनुकूल अपने भोगे हुए जीवन में से स्थिति और पात्र निर्मित किये हैं और उनसे फिर समस्या की ओर लौटा हूँ।'' [12]

कहानीकार अपने जीवनानुभव के मूल्यवान सन्दर्भों और प्रसंगों से कथा गढ़ता है। डॉ. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव के अनुसार–''रामदरश मिश्र की कोई भी कहानी उनके अनुभव के दायरे के बाहर नहीं है परन्तु जीवन के अनुभवों को वे हू–ब–हू रचना में उतारते नहीं बल्कि रचना में फिर से उसे अर्जित करते हैं। इससे उनके अनुभवों में निजता और तटस्थता का एक विचित्र सम्मिश्रण देखने को मिलता है।'' [13]

रामदरश मिश्र की इन कहानियों के कथानक अपने समाज की मिट्टी से गढ़े हुए हैं। गाँव और शहर दोनों परिवेशों में इन कथानकों को गढ़ा गया है इसलिए कथा शिल्प कृत्रिम अथवा बनावटी नहीं लगते हैं। उसमें गाँव और शहर की सच्ची तस्वीरें हैं जो विश्वसनीयता और प्रामाणिकता की विशेषताओं से युक्त है। यह सत्य है कि मिश्र जी की कोई भी कहानी ऐसी नहीं है जिसका कथानक अविश्वसनीय और अप्रामाणिक लगे। इसका कारण यह है कि मिश्र जी अनुभव का साथ नहीं छोड़ते और वे जीवनानुभव के प्रत्यक्ष और प्रामाणिक सन्दर्भों को लेकर ही कथानक का ताना–बाना बुनते है। कथानक की निर्मिति में काल्पनिक रूप का सहारा उन्हें नहीं लेना पड़ता क्योंकि उनकी चेतना जीवन के बहुआयामी स्वरूप को अपने अन्तस् में अनुभव करती रहती है और उसे जीती रहती है।

रामदरश की रचनात्मक मानसिकता में शहर और गाँव एक साथ मिले हुए हैं। उन्हें अलग–अलग करना मुश्किल होता है शहर की कहानी लिखते लिखते वे कब गाँव में लौट जायेंगे और गाँव की कहानी कहते–कहते कब शहरी जिन्दगी से जुड़ जाएंगे यह कहना कठिन है। कई स्थानों में शहरी कथानकों के बीच एक देहात है और कई स्थानों पर देहाती कथानकों के मध्य एक शहर उग आता है।

'माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो' में कथानक तीन धरातलों' पर पसरा हुआ है निजी, सामाजिक और राजनीतिक। एक धरातल दूसरे धरातल से इस प्रकार गुंथा हुआ है कि अलग नहीं किया जा सकता। माँ की मृत्यु हो गयी है, दूसरे स्तर पर बाढ़ और अकाल के कारण गाँव में दुर्दशा है, तीसरे स्तर पर राजनीतिक पाखण्ड के सन्दर्भ जुड़े हुए हैं ये सब एक साथ गुंथे हुए हैं। नरेन्द्र मोहन के अनुसार– ''गाँव की ओर उनके लौटने का कारण सृजनात्मक मजबूरी है यथार्थ से पलायन या नॉस्टेलजिया' नहीं है। यह वह जमीन है जहाँ वे खड़े हैं, उनकी कहानियाँ खड़ी हैं एक स्थल पर वे स्वीकार करते हैं 'लगता है मेरे भीतर सदा मेरा गाँव जीता रहा। कहने की आवश्कता नहीं कि यही वह जमीन है जहाँ से उनके तमाम मानवीय सरोकार फूटे हैं।'' [14]

मिश्र जी नई कहानी के कहानीकार हैं। नई कहानी के कहानीकारों ने अपनी विभिन्न रुचियों, अनुभवों और परिवेश से कथानक गढ़े हैं। रामदरश मिश्र ने अपने परिवेश से अनुभवों को उठाया है और उनके संघर्षों के बीच से कथानक बुने हैं इसलिए मिश्र जी का कथानक हमेशा देशकाल से जुड़ा होता है। रामदरश मिश्र की कहानियों का कथानक अपनी मिट्टी के विभिन्न रूपों, रंगों और स्थितियों को अपने भीतर समाता हुआ आगे बढ़ता है। नरेन्द्र मोहन के अनुसार –''उनकी कहानियों में गंवई मिट्टी के प्रति अटूट लगाव झलकता है। यह लगाव भी बताता है कि उनके साथ कथा सृजन की जड़ें गाँव में गहरे तक धंसी हुई हैं वहीं से वे खुराक हासिल करते हैं, वहीं से उनकी कहानियों का पेड़ पल्लवित और विकसित हुआ है।'' [15]

मिश्र जी की कहानियों के कथानक अतीत और वर्तमान दोनों से गहरे जुड़े होते हैं कहीं कहानी अतीत से शुरू होती है और वर्तमान पर खत्म हो जाती है तो कहीं कहानी का कथानक वर्तमान से शुरू होकर अतीत की ओर ले चलता है। पूर्वदीप्ति पद्धति कहानीकार रामदरश की अपनी कथानक गढ़ने की प्रिय पद्धति है। 'माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो' में कहानीकार शहर में रहते हुए अतीत में डूबने लगता है और वह अपने वर्तमान से अतीत में जाकर देखता है कि माँ मर चुकी है। माँ के मरने के साथ ही पूरे घर में उदासी छा गई। पिताजी और बुआ जी की उदासी का चित्रण पाठक को रुला देता है। सारे गाँव में अकाल छाया हुआ है लोग भूखों मर रहे हैं इस प्रकार कथानक में प्रकृति, समाज, परिवेश, व्यवस्था आदि सभी मिलजुल कर उसे प्रभावशाली बना देते हैं।

'खाली घर' कहानी में बीनू के चाचा शहर से गाँव की ओर आते हैं उन्हें पता चलता है कि उनकी भाभी की मृत्यु हो गयी है। भाभी की स्मृतियाँ उनके मन में निरन्तर उठती रहती हैं। उधर बीनू जो चार साल का बच्चा है अपनी दिवंगत माँ के लौट आने की प्रतीक्षा करता है। बीनू को लेकर उसकी बहन चम्पा और पिताजी परेशान हैं। इस प्रकार कहानी में अतीत और वर्तमान दोनों आते–जाते हैं। परिवेश के बीच से ही कथानक का तानाबाना बुना गया है। भाभी की मृत्यु जैसे घर और बाहर एक अजीब सी उदासी फैलाये हुए है। कहानी में सुधीर, बीनू, चम्पा और बड़े भाईसाहब के दुख–दर्द की विभिन्न यथार्थ स्थितियों को कथानक व्यक्त करता है। भाभी के कमरे का विराट सूनापन, अंधकार में पूरे घर का डूबना, आँगन का सूनापन, किसी चिड़िया के बच्चे सा विनोद का फँसना आदि सभी घटनाओं का मर्मस्पर्शी चित्राण कथानक को जीवंत विश्वसनीय और प्रामाणिक बना देता है। इसी प्रकार 'सीमा', 'पराया शहर', 'माँः एक बिखरा हुआ दिन', 'एक अधूरी कहानी', 'बेला मर गई', 'पशुओं के बीच', 'आखिरी चिट्ठी' आदि कहानियों के कथानक वर्तमान और अतीत की संवेदनाओं से निर्मित हैं। महावीर सिंह चौहान के अनुसार–''मिश्र जी की अधिकांश कहानियाँ संस्मरणात्मक रूप में लिखी गयी है जैसे लेखक हमें विश्वास दिला देना चाहता है कि कहानियों में व्यक्त अनुभव उसके अपने खुद के जीवनानुभव का ही पुनर्नियोजित रूप है और जहाँ तक कहानियों में व्यक्त जीवन संवेदन का सवाल है वह मिश्र जी का खुद का अपना है भी। [16]

रामदरश मिश्र की ये कहानियाँ कहीं उत्तम और कहीं अन्य पुरुष दोनों ही प्रकार के शिल्पों में लिखी गई है। उनकी कहानियों में कहीं पूर्व दीप्ति शिल्प है, कहीं संकेतों और प्रतीकों से निर्मित शिल्प भी है। पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु के अनुसार–''इन कहानियों में एक ओर स्मृति के पंखों पर उड़ने वाला पूर्वदीप्ति शिल्प है तो दूसरी ओर संकेतों–प्रतीकों का अन्तग्रंथित शिल्प; एक ओर कहानी की पूरी संरचना में निहित विरोधी, समांनतरता का कटावदार शिल्प है तो दूसरी ओर फंतासी का यथार्थ व्यंजक शिल्प। और ये सभी शिल्प कथा की प्रस्तुति के अनुरूप उससे एक मेक होकर सहज, स्वाभाविक रूप में उभरे निखरे शिल्प है।'' [17]

'लाल हथेलियाँ,' में पूर्वदीप्ति शिल्प है। 'पिंजड़ा' में संकेतों और प्रतीकों वाला शिल्प है। 'पिंजड़ा' के नायक के लिए पूरा कस्बा और घर ही पिंजड़ा बन जाता है। 'सर्पदंश' में प्रतीकात्मकता है। उच्च जाति वाले प्रधान और मुखिया लोगों द्वारा हरिजनों पर अत्याचार का वर्णन है गोकुल साँप के काटने से तो बच जाता है परन्तु मुखिया के मारने (काटने) से मर जाता है। यहाँ साँप मुखिया है इसलिए संकेतों और प्रतीकों वाला शिल्प है। फैंटेसी शिल्प को लेकर मिश्र जी ने केवल एक कहानी लिखी है – 'एक इन्टरव्यू उर्फ कहानी तीन शुतुरमुर्गों की'। यह कहानी इन्टरव्यू की यथार्थता का सच्चा चित्र प्रस्तुत करती है।

रामदरश मिश्र की कहानी प्रक्रिया में एक दोष मुझे यह दिखाई पड़ा कि कुछ कहानियों में वे अनावश्यक विस्तार में चले गए हैं इससे वे कहानियाँ नीरस और बोझिल हो गई हैं। 'एक अधूरी कहानी', 'आखिरी चिट्ठी', 'अकेला मकान', आदि ऐसी ही कहानियाँ है। सुरेन्द्र तिवारी के शब्दों में – ''मिश्र जी की कहानियों में दो बातें जरूर अखरती हैं। एक तो उनका अतिरिक्त विस्तार में जाना और दूसरा काव्यात्मक भाषा से लगाव।'' [18] अश्विनी पाराशर के अनुसार –''कहानी की गहराई और उसका फैलाव जब इतना अधिक व्याप्त हों जाए कि केन्द्रीय पात्र के पूरे कथानक माहौल में फैल जाए, उस समय पात्र–पात्र न रहकर एक प्रवृत्ति, एक मानसिकता में ढल जाएं तो कहानी सामान्य नहीं रहती।'' [19]

रामदरश मिश्र की लम्बी कहानियाँ कहानी और उपन्यास के बीच एक पुल का स्वरूप लिये हुए है। इनमें कुछ कहानियाँ ऐसी हैं जिनका शिल्प उपन्यास जैसा लगता है लेकिन वस्तु कहानी के स्तर की है दूसरी ओर कुछ ऐसी लम्बी कहानियाँ है जिसमें वस्तु उपन्यास जैसी है लेकिन शिल्प कहानी का है। 'एक अधूरी कहानी', 'बंसत का एक दिन', 'अकेला मकान', 'आखिरी चिट्ठी' जैसी लम्बी कहानियाँ औपान्यासिक वस्तु को लेकर कहानी के शिल्प में रची हुई दिखाई देती है। दूसरी तरफ 'निणर्यों के बीच निर्णय', 'मुर्दा मैदान', 'पराया शहर', 'खण्डहर की आवाज' जैसी लम्बी कहानियों में वस्तु कहानी की है किन्तु शिल्प उपन्यास का लगता है। 'खण्डहर की आवाज' कहानी पर दृष्टि डालने पर उसका शिल्प उपन्यास के रूप में दिखाई पड़ता है और उसकी वस्तु कहानी जैसी दिखाई पड़ती है। कहानी का प्रारम्भ एक खण्डहर के इर्द–गिर्द होता है कहानी का नायक अपने गाँव की यात्रा के समय याद करता है कि कभी यहाँ स्कूल था जिसमें वह पढ़ा था किन्तु कथावाचक इसे खण्डहर के रूप में देखकर दुःखी होता है। यहाँ एक विराट स्मृतिबिम्ब उभरता है, बचपन के वे दिन इस जगह से जुड़ी यादें कथावाचक को अतीत में ले जाती हैं अतीत से गुजरने के बाद कथावाचक वर्तमान में आ जाता है। गाँव का स्कूल, स्कूल के पंडित जी, और पंडित जी का राजनीति में प्रवेश करना, पंडित जी के द्वारा दूसरा विवाह कर लेना और राजनीति के कारण पंडित जी की दुर्दशा होना आदि सभी बातें कथावाचक को बेचैन कर देती हैं। कथावाचक इस स्कूल में पढ़ा है इसलिए पंडित जी की दुर्दशा उससे सही नहीं जाती। अतीत से वर्तमान में आते जाते पूरा परिदृश्य साकार हो उठता है। कहानी का शिल्प औपान्यासिक सा लगता है और वस्तु कहानी की विधा के ही अनुकूल है। पाठक कहानी पढ़ते हुए अतीत और वर्तमान के हिंडोले में एक प्रकार से झूलने लगता है।

रामदरश मिश्र प्रभावशाली उपन्यासकार भी हैं इसलिए उनकी कलम जहाँ अवसर पाती है वहाँ औपन्यासिक रूप में चलने लगती है। पाठक को लगता है जैसे वह कहानी नहीं उपन्यास पढ़ रहा है। लेकिन इन लम्बी कहानियों में कहीं न कहीं सरसता का प्रवाह अवरुद्ध हुआ है, पाठक कहीं–कहीं गुमराह हो जाता है और उसकी सरसता में भी कहीं–कहीं बाधा पहुँचती है; वह उबने भी लगता है। मिश्र जी ने कुछ लघु आकार की कहानियाँ लिखी हैं इन्हें लघु कथा भी कहा जा सकता है – 'राजा गार्डन जाना है', 'अध्यात्मवाद', 'नेमप्लेट', 'वह औरत', 'तीसरी आँख',। आकार की दृष्टि से ये 'लघु कथा', के दायरे में नहीं आती हैं अर्थात् लघु कथा से कुछ अधिक लगती हैं। सुरेन्द्र तिवारी के अनुसार – ''इन छोटी कहानियों में वह सब कुछ पाया जा सकता है जिसकी उम्मीद हम एक पूर्ण कहानी से करते हैं 'एहसान', 'प्रपंच' 'पाँच कहानियाँ', 'चिकित्सा', 'पुरस्कार', 'माँ', 'हँसी', 'संवाद', 'सफेद चोरी', 'इज्जत', 'प्यास', 'विरोध', 'जहर', 'पटाखे', आदि ऐसी कहानियाँ हैं पाठक को भीतर कर झकझोर सकती हैं। यहाँ सिर्फ कहानी नहीं है बल्कि कथा तत्त्व के साथ वैचारिक तत्त्व भी मौजूद है..... ।'' [20]

कहानीकार रामदरश मिश्र ने अपनी कुछ कहानियों के कथानक निजी जीवन से गढ़े हैं जिनका सीधा जुड़ाव उनके अपने परिवार से है। ऐसी कहानियों में 'ही इज हेमंतस फादर', 'दिन के साथ', 'फिर कब आयेंगे'? 'सोनू कब आयेगा पापा?' ऐसी ही कहानियाँ हैं। 'दिन के साथ' कहानी में कहानीकार अपनी पत्नी की दिनचर्या का पूरा चित्र प्रस्तुत करता है जो परिवार के लिए सुबह से लेकर रात सोने तक लगी रहती हैं। अपने बेटों, बहुओं, पोते–पोतियों के हर काम में, उनके दुख–सुख में चेतना जी जुटी रहती हैं। विवाह के प्रारम्भ से लेकर वृद्धावस्था आने तक वे अपने किसी शौक अथवा किसी रुचि के लिए नहीं जीतीं बल्कि पास–पड़ोस के दुख दर्द में हिस्सा लेती रहती हैं। रामदरश जी पति (कहानीकार) जब अपनी पत्नी (चेतना जी) को आराम करने की सलाह देते हैं तो वह कहती हैं – ''आप क्या सोचते हैं कि मैं अपने को सजा दे रही हूं। यह क्यों नहीं सोचते कि इससे शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है – – – – और किसके लिए करती हूँ? किसी पराए के लिए? अरे ये बहुए, बेटे, पोते सब अपने ही हैं न ?'' [21]

यह सच्चाई है कि रामदरश मिश्र की पत्नी उनकी सच्ची सहयोगिनी हैं। परिवार के समस्त कार्यों को बड़े कौशल से उन्होंने सम्भाला है इसीलिए मिश्र जी भरपूर साहित्य साधना कर सके हैं। परिवार के अन्दर और बाहर की चिंताओं से उनकी पत्नी उन्हें निश्चिंत बना देती हैं जिसके कारण मिश्र जी खूब पढ़ लिख पाते हैं। 'फिर कब आयेंगे'? कहानी में कहानीकार के बड़े भाई साहब गाँव से उनके घर शहर में आते हैं। मिश्र जी के घर उनके भाई कुछ बातों का विरोध करते हैं जो परिवार को अच्छा नहीं लगता। पास पड़ोस में बैठकर भाई साहब किसी से कुछ अप्रिय संवाद कर बैठते हैं इन सब बातों से कहानीकार दुखी हो जाता है किन्तु उनके हृदय में बड़े भाई साहब के लिए बड़ा आदर रहता है। अंत में बड़े भाई साहब गाँव जाने को कहते हैं तो कहानीकार बड़े दर्द भरे हृदय से कहते हैं 'फिर कब आयेंगे?' इस प्रकार कथानक बहुत हृदय स्पर्शी बन कर उभरता है।

रामदरश मिश्र अपनी इन कहानियों में जीवन के विभिन्न आयामों को उठाते हैं। जीवन की हर गतिविधि का चित्र इन कहानियों में खींचते हैं किन्तु उनकी इन कहानियों के कथानक लगभग सभी एक जैसी हैं। उनकी प्रस्तुति की शैली में कोई विभिन्नता नहीं है यह उनके कथानकों की सीमा है। सुरेन्द्र तिवारी के अनुसार –

''रामदरश जी की कहानियों में शिल्प का वैविध्य नहीं है। जीवन के हर क्षेत्र से, कोण से वे कथा जरूर उठाते हैं पर उन्हें प्रस्तुत करने का ढंग एक सा ही है। इसी कारण इनकी कहानियाँ कोई चमत्कार पूर्ण आकर्षण पैदा नहीं करती किन्तु पाठक के मन में एक संतोष जरूर पैदा करती हैं – कथ्य और ट्रीटमेंट के कारण।'' [22]
अपनी कुछ सीमाओं के बावजूद मिश्र जी की कहानियों के ये कथानक अपने भीतर जीवन के विभिन्न आयामों एवं गतिविधियों को समाये हुए हैं। ये कथानक विशाल जीवन की झाँकी दिखाने में सक्षम हैं।

संदर्भ

1. 'रामदरश मिश्र रचनावली' 3–सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृ. VIII
2. 'रामदरश मिश्र रचनावली' 3–सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृ. IX
3. 'रामदरश मिश्र की कहानियाँ : पीड़ा के मूल स्रोतों की खोज–'रामदरश मिश्र की सृजन यात्रा' महावीर सिंह चौहान पृ. 122
4. 'रामदरश मिश्र रचनावली' 3–सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृ. IX
5. 'रामदरश मिश्र रचनावली' 3–सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृ. X
6. 'एक औरत एक जिन्दगी' – रामदरश मिश्र रचनावली 3–सं. रामदरश मिश्र स्मिता मिश्र पृ. 96
7. 'पशुओं के बीच'–रामदरश मिश्र रचनावली 3–सं. रामदरश मिश्र स्मिता पृ. 356
8. 'कर्ज'–रामदरश मिश्र रचनावली 3–सं. रामदरश मिश्र स्मिता पृ. 213
9. रामदरश मिश्र रचनावली 3–सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृ. X
10. रामदरश मिश्र रचनावली 3–सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृ. IX
11. रामदरश मिश्र रचनावली 3–सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृ. X
12. रामदरश मिश्र रचनावली 3 सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृ. X
13. रामदरश मिश्र की कथा यात्रा डॉ. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव –रचनाकार रामदरश मिश्र सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचंद गुप्त पृ. 326 ।
14. 'संवेदना और निर्णय के द्वन्द्व की कहानियाँ नरेन्द्र मोहन' रचनाकार रामदरश मिश्रः सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचंद गुप्त पृ. 310
15. 'संवेदना और निर्णय के द्वन्द्व की कहानियाँ नरेन्द्र मोहन' रचनाकार रामदरश मिश्रः सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचंद गुप्त पृ. 309
16. 'रामदरश मिश्र की कहानियाँ : पीड़ा के मूल स्रोतों की खोज' रामदरश मिश्र की सृजन यात्रा' महावीर सिंह चौहान पृ. 132
17. 'सहज कहानी का संवेदन सिद्ध संसार' – पाण्डेय राशि भूषण शीतांशु 'रामदरश मिश्र व्यक्ति और अभिव्यक्ति' – सं. ज्ञान सिंह एवं स्मिता मिश्र पृ. 191
18. 'मानवीय संवेदनाओं की उकेरती कहानियाँ' – सुरेन्द्र तिवारी, 'रामदरश मिश्रः व्यक्ति और अभिव्यक्ति' – सं. जगन सिहं एवं स्मिता मिश्र पृ. 182
19. 'रामदरश मिश्र की लम्बी कहानियाँ'–डॉ. अश्विनी पाराशर, 'रचनाकार रामदरश मिश्र' – सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचंद गुप्त पृ. 336
20. 'मानवीय संवेदनाओं की उकेरती कहानियाँ' – सुरेन्द्र तिवारी रामदरश मिश्रः व्यक्ति और अभिव्यक्ति – सं. जगत सिहं एवं स्मिता मिश्र पृ. 182
21. 'दिन के साथ' – रामदरश मिश्र रचनावली – 4 सं. रामदरश मिश्र स्मिता मिश्र पृ. 270
22. 'मानवीय संवेदनाओं की उकेरती कहानियाँ' – सुरेन्द्र तिवारी, 'रामदरश मिश्रः व्यक्ति और अभिव्यक्ति' – सं. जगन सिहं एवं स्मिता मिश्र पृ. 182